International Journal on Science and Technology (IJSAT)
E-ISSN: 2229-7677 ● Website: www.ijsat.org ● Email: editor@ijsat.org

नृत्यों का स्मुच्चय : लाई हराओबा

डॉ गोपाल कुमार

हिंदी अधिकारी, विश्वभारती

सारांश

मणिपुर पूर्वोत्तर भारत स्थित प्रदेश है। यह उत्तर में नागालैंड, दक्षिण में मिज़ोरम,पश्चिम में असम तथा पूरब में म्यांमार से घिरा है। लाई हराओबा मणिपुर के मैतै समुदाय के निवासियों का प्रमुख त्योहार है। इस त्योहार में प्रदर्शित किए जाने वाले प्राचीनतम एवं परंपरागत लोक-नृत्यको भी लाई हराओबा कहा जाता है जिसमें यहां के निवासियों के आर्येतर धार्मिक विश्वासों, आध्यात्मिक चिंतन और जनजातीय कला तथा संस्कृति के बहुत से तत्व अभी भी विद्यमान हैं। लाई हराओबा से ही अन्य मणिपुरी नृत्य शैली का उद्भव माना जाता है। इस त्योहार के दौरान अनेक नृत्यों के माध्यम से विभिन्न क्रियाकलापों को प्रदर्शित किया जाता है। इस शोध-पत्र के माध्यम से लाई हराओबा त्योहार के दौरान प्रदर्शित किए जाने वाले विभिन्न नृत्य शैलियों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। इन नृत्यों के माध्यम से सृष्टि निर्माण की विविध गतिविधियों को दर्शाने की प्रक्रिया को दिखाने का प्रयास किया जाता है। इससे लाई हराओबा के दौरान प्रदर्शित की जाने वाली पारंपरिक नृत्य शैलियों एवं मणिपुर के मैतै समुदाय के जीवन दर्शन की जानकारी अन्य क्षेत्र के लोगों को मिलेगी।

बीज शब्द : लाई हराओबा, हस्तमुद्रा, लाइबोजागोई, नोइबा, माइबी, माइबा

परिचय

मणिपुर रत्नों के प्रदेश के रूप में जाना जाता है। यहाँ के निवासी नृत्य, संगीत, पारंपरिक खेल-कूद इत्यादि में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं एवं स्वस्थ रहते हुए लंबी आयु प्राप्त करते हैं। मणिपुर पूर्वोत्तर भारत स्थित सीमांत प्रदेश है। मणिपुर की पूर्व वैष्णवकालीन संस्कृति यहां के प्राचीनतम लोकोत्सव तथा लोक-नृत्य 'लाई हराओबा' के रूप में आज भी सुरक्षित है। प्राचीन काल में मैतै समाज 'नृत्य' को 'नोइबा' कहते थे।[1]लाई हराओबा मुख्य रूप से नृत्य एवं गान उत्सव है। लाई हराओबा मैतै संस्कृति के पारंपरिक नृत्य और गीतों का प्रतीक है। लाई हराओबा के मूल की जानकारी अकोइजमतॉम्बी की पुस्तक 'पैंथोइबीखोंग्गुल' में नोंगपोकनिंगथौ और पैंथोइबी की पूजा के उल्लेख के रूप में मिलती है।[2]उत्सव के दौरान कई प्रकार के रीति-रिवाज देखने को मिलते हैं। अलग-अलग प्रकरण के रूप में एकल, युगल या समूह नृत्य की प्रस्तुति की जाती है। इसका सबसे आवश्यक भाग विशाल समूह द्वारा खुले मैदान में नृत्य और संगीत के माध्यम से संपूर्ण सृष्टि निर्माण प्रक्रिया के नाटक का मंचन है। लाई हराओबा केवल मैतै समुदाय द्वारा किया जाने वाला बहुत ही सुंदर नृत्य शैली है। मणिपुर के पारंपरिक लाई हराओबा में वसुधैव कुटुंबकम का विचार है। इस कला का गहन अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि शारीरिक स्वास्थ्य एवं वैचारिक वैभव बहुत महत्वपूर्ण है। अत: इसे नृत्य के माध्यम से शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के रूप में भी देखा जा सकता है।

संपूर्ण नृत्य प्रक्रिया को देखने पर इसमें ह्रासोन्मुख बौद्धकालीन तांत्रिक मत तथा हिंदू विधि-विधानों और मणिपुरियों के धार्मिक अनुष्ठानों का एहसास होता है। समय के साथ इसमें भी परिवर्तन हुआ है। इसका मूल रूप मणिपुरी भाषा में लिखित 'थिरेललयाट', 'पुदिल' तथा 'लैयकलैखारोल' नामक पुराणों में मिलता है।[3]इन ग्रंथों में वर्णित लाई हराओबा नृत्य के नर्तक-नर्तकियों की विशेष मुद्राएं, भंगिमाएं तथा अंग-प्रत्यंग संचालन प्रक्रियाएं भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में वर्णित मुद्राओं और भंगिमाओं से काफी भिन्न हैं।[4] समय के साथ इस नृत्य में नाट्यशास्त्र के नृत्य तकनीकों को भी ग्रहण किया गया है।[5]अत: वक्त के साथ-साथ नृत्य में मानक मान्यताओं को भी स्थान देने का प्रयास किया गया है।

लाई हराओबा का प्रथम चरण सृष्टि संबंधी मिथकीय अवधारणा से आरंभ होता है। इसमें पृथ्वी को माता तथा आकाश को पिता स्वरूप आलिंगनबद्ध दिखाते हुए उसके समागम का संकेत किया जाता है, जिसके फलस्वरूप सृष्टि होती है। इस प्रकार पृथ्वी और आकाश के महामिलन से सृष्टि विस्तार का भाव प्रकट किया जाता है। उल्लेखनीय है कि इस समाज में सृष्टि निर्माण की वास्तविक प्रक्रिया को स्वस्थ तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। लाई हराओबा के सूक्ष्म विश्लेषण से

मणिपुर के मैतै समुदाय के देवी-देवता तथा सृष्टि रहस्य संबंधी चिंतन की मौलिकता एवं उस पर भारतीय चिंतन के प्रभाव की जानकारी मिलती है। मणिपुरी भाषा में 'लाई' का अर्थ देवता और 'हराओबा' का अर्थ 'हर्ष मानना' या 'क्रीड़ा करना' होता है। अतः लाई हराओबा का तात्पर्य देवी-देवताओं के आनंदोत्सव से है। सृष्टि को भगवान की लीला या क्रीड़ा माना गया है। 'लाई हराओबा' नृत्य नाटिका के पीछे सृष्टि संबंधी यही अवधारणा है। इस प्रकार काम-क्रीड़ा को पवित्रता के साथ दर्शाया जाता है।

लाई हराओबा नृत्य आंगिक अभिनय प्रधान है। अतः इसमें शरीर के विभिन्न अंग-प्रत्यंग तथा उपांग के हाव-भाव, थिरकन, मचलन और चेष्टाओं द्वारा नाट्यशास्त्र में वर्णित प्रतीकात्मक एवं सांकेतिक मुद्राओं में ही नृत्य की पूरी कथावस्तु को प्रस्तुत कर दिया जाता है। लाई हराओबा में सैकड़ों संयुक्त और असंयुक्त हस्त मुद्राओं का प्रयोग अलग-अलग भाव-प्रतीकों के रूप में किया जाता है। इनके अतिरिक्त पैर, सिर, गर्दन, भौं, आँख तथा उर की भी अनेक मुद्राओं तथा भंगिमाओं का प्रदर्शन इस नृत्य में होता है। मणिपुरी नृत्य शैली में ये मुद्राएं और भंगिमाएं ही ऐसी विशिष्टताएं हैं जिनके आधार पर इन्हें शास्त्रीय नृत्य में गिना जाता है

पौराणिक दृष्टि में लाई हराओबा

आर के सिंह अचौबा उद्धृत करते हैं कि एक प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक के आधार पर 'लाई हराओबा' शब्द का निर्माण 'लाई होइलाओबा' से हुआ है।[6] इसका शाब्दिक अर्थ 'खुशी का चीत्कार' (cry of joy) है। मैतै के एक मिथक के अनुसार देवता अतियकुरूसिदबा के पुत्र असिबा ने पृथ्वी का निर्माण किया। पर वह जीवित प्राणियों के निर्माण की परिकल्पना नहीं कर सका। अतियकुरूसिदबा ने अपना मुंह खोला और असिबा को दिखाया कि जीवित प्राणियों को पृथ्वी पर कैसे रखा जाना चाहिए। असिबा ने उत्तेजना में चिल्लाया 'होइ' और इस घटना को ''लाई होइलाओबा' या 'देवता की खुशी का चीत्कार' कहा गया। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मनुष्यों द्वारा सृष्टि के इस दिव्य कार्य का पुनः मंचन लाई हराओबा कहलाता है।

लाई हराओबा त्योहार में देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मनुष्य द्वारा नृत्य के माध्यम से पृथ्वी और जीवों की उत्पत्ति की प्रक्रिया दर्शायी जाती है। इस प्रस्तुति में कई नाटकीय तत्वों का भी समावेश दिखता है। लाई हराओबा में 364 देवता एवं इतनी ही देवियां हैं।[7] अतः अनुष्ठान पद्धति स्वाभाविक रूप से बहुत विस्तृत है। अनुष्ठानों में कई नृत्य शामिल हैं; विशेष रूप से हाथ के सांकेतिक अनुक्रम से देवता की पूजा की जाती है। 364 संकेत हस्तमुद्रा के 364 संकेत निर्धारित किए गए हैं।[8] इन हस्त मुद्राओं को खुथेक कहा जाता है। ये संकेत हस्तमुद्रा इस प्रकार हैं:

"खायोमजागोईखुथेक"		1
"लैनिंगथौयेतकी (दाहिनी ओर) खुथेक"	1	
"लैरेम्बीओइगी (बायीं ओर) खुथेक"	1	
"हक्चांग सबा (शरीर निर्माण नृत्य) खुथेक"	64	
"नुंगंगौजागोई (बच्चे को जन्म देने वाला नृत्य) खुथेक"	55	
"यमसरोल (गृह निर्माण नृत्य) खुथेक"	40	
"पंथोईबीजागोई (पंथोईबी नृत्य) खुथेक"	14	
"पम्यानलोनजागोई (कृषि नृत्य) खुथेक"	37	
"लैंगनैरोल और फिसारोलजागोई (सूत और बुनाई नृत्य) खुथेक"	140	
"लोंखोनजागोई (मछली पकड़ने वाला नृत्य/आत्मा) संग्रह नृत्य) खुथेक"	11	

नृत्य की सांस्कृतिक और लोकधर्मी श्रेणियाँ

'लाई हराओबा लाईहो नृत्य' का आरंभ सृष्टि सृजन के लिए देवता सिदबामापू के जल समाधि से बाहर आने की घटना से प्रेरित है। असिबा द्वारा सृजित सृष्टि को नष्ट करने के लिएस शैतान हराबा की योजना और प्रयास के फलस्वरूप पुरुषों के लिए एक विशेष नृत्य की उत्पत्ति हुई जिसे 'नुपाजागोई' नृत्य कहा जाता है। हराबा से सृष्टि की रक्षा करने के लिए बिजली की देवी, 'नॉन्गथांगलिमा' ने पहली बार महिलाओं के लिए एक नृत्य की रचना की जिसे 'नुपीजागोई' नृत्य कहा जाता है।

'लेइशी नृत्य' की उत्पत्ति देवी लैनुरस द्वारा पृथ्वी को आकार देने के क्रम में हुई थी। फिर सिदबामापू के आदेशानुसार असिबा द्वारा पृथ्वी पर जीवन की रचना की गई।

लाई हराओबा के सभी नृत्य को "थौगालजागोई" के अंतर्गत माना जा सकता है क्योंकि यह सभी देवी-देवताओं के आह्वान एवं दर्शन के लिए आयोजित की जाती है। 'थौगल' का मतलब प्रार्थना और सेवा है। लाई हराओबा के थौगालजागोई, फामदौजागोई पुरुष समूह नृत्य, लैमारेलथौगालजागोई महिला समूह नृत्य, फुंगारोलजागोई पुरुष एवं महिला युगल नृत्य के मूल में लोक तत्व हैं पर "लाइचिंगजागोई" जैसे कुछ सांस्कृतिक तत्व भी हैं। कई अनुष्ठानों में नृत्य का समावेश होता है; विशेष रूप से देवता की पूजा हस्त मुद्राओं के क्रमिक प्रदर्शन के माध्यम से की जाती है। कुछ प्रमुख नृत्य अनुष्ठान इस प्रकार हैं:

थौगालजागोई: थौगालजागोई, जिसे अष्टांगबी नृत्य भी कहा जाता है, वन देवताओं को समर्पित एक महत्वपूर्ण नृत्य है। इसमें पुरुष और महिला दोनों भाग लेते हैं। भूमि की उर्वरता हेतु देवताओं का आह्वान करने के लिए इसमें प्रायः माइबी (पुजारिन) भी शामिल होती है। पारंपरिक तत्वों के साथ-साथ अब यह नृत्य मंचीय प्रस्तुतियों का हिस्सा भी बन चुका है। नृत्य के साथ संगीत हेतु पारंपरिक वाद्य यंत्र पेना और लांगदेन का प्रयोग किया जाता है।

माइबीजागोई: लाई हराओबा नृत्य में माइबी और माइबा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्हें क्रमशः देवदासी और देवदास के रूप में समझा जाता है, हालांकि वे सामान्यतः गृहस्थ जीवन भी व्यतीत करते हैं। त्योहार के दौरान ये पुजारिन और पुजारी की भूमिका निभाते हैं। माइबीजागोई के माध्यम से माइबी वन देवता उमंग लाई का आह्वान करती हैं तथा उनकी पूजा-अर्चना करती हैं। यह नृत्य आध्यात्मिकता और स्त्री शक्ति का प्रतीक है, जो मानव और आत्मा के बीच एक सेतु का कार्य करता है। इसमें पानी, विभिन्न मुद्राओं और संकेतों के माध्यम से देवताओं को आमंत्रित किया जाता है। इस शैली में क्षेत्रीय विविधताएँ भी देखने को मिलती हैं, जिनमें लेइहो जनजाति द्वारा प्रस्तुत विशेष नृत्य अपनी अनूठी शैली और भव्य वेशभूषा के लिए प्रसिद्ध है। माइबीजागोई ने न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान बनाई है।

लाइबोखोम्बा: यह नृत्य ब्रह्मांड की अवधारणा को दर्शाने के लिए 364 हस्त मुद्राओं के अनुक्रम का प्रयोग करता है, जो इसकी व्यापकता और गूढ़ता को दर्शाता है।

हाकमसागला या हकांगसाबा: इसमें 64 हस्त मुद्राओं के प्रदर्शन द्वारा मानव शरीर की रचना का सजीव चित्रण होता है।

अंगम उनाबा: यह नृत्य 40 हस्त मुद्राओं के माध्यम से शिशु के जन्म के विभिन्न चरणों को दर्शाता है।

यमशरोल या यमसबा: 44 हस्त मुद्राओं के जरिए गृह निर्माण की प्रक्रिया को प्रदर्शित किया जाता है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि मतै समाज घर बनाने के लिए स्थान चयन में ज्योतिष शास्त्र के दिशा-निर्देशों का पालन करता है। जमीन में पशु की अस्थि मिलने पर उसे अशुभ मानकर हटाया जाता है। गृह-निर्माण के लिए जमीन को नौ श्रेणियों में बांटा गया है, जिनमें विभिन्न गुण और दोष होते हैं। गृह मालिक के जन्म की तिथि के आधार पर उपयुक्त जमीन चुनी जाती है।

पांथोईबीजागोई: इस नृत्य में देवी अवतार पंथोइबी को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया जाता है — पागल, उग्र, बधिर, मूक, घृणित, हठी, लंगड़ी, अनाथ, अड़ियल, वेश्या, दिवसस्वप्न देखने वाली, योद्धा, रसोइया, लकड़ी काटने वाली, मछली बेचने वाली, दयालु, क्रूर इत्यादि। इन सब भावों को लाई हराओबा में पंथोइबी नृत्य के चेहरे के हाव-भाव में आत्मसात किया गया है। इस नृत्य में 14 हस्त मुद्राओं का प्रयोग होता है।

पनीनलोनजागोई: यह नृत्य 39 हस्त मुद्राओं के माध्यम से कपास के निर्माण की विधि को दर्शाता है।

फिसारोलजागोई: 146 हस्त मुद्राओं के प्रदर्शन द्वारा कपड़ा बुनने की प्रक्रिया को चित्रित करता है।

लांगखोलजागोई: मछली पकड़ने की कला को 9 हस्त मुद्राओं के माध्यम से सजीव रूप देता है।

पाटोनजागोई: दो हस्त मुद्राओं के जरिए फसल काटने की विधि प्रदर्शित करता है।

फिबुलजागोई:इसमें गेंद के खेल को दर्शाने हेतु 6 हस्त मुद्राओं का प्रयोग किया जाता है।

माइबी नृत्य: लाई हराओबा का अधिकांश भाग माइबी की पवित्र भागीदारी और देखरेख में संपन्न होता है, इसलिए इसे 'माइबी नृत्य' भी कहा जा सकता है। लाई हराओबा के पहले दिन (लिकौबा) माइबी द्वारा लाइहो, इहाई, और लाइओक्पा जैसे नृत्यों का प्रदर्शन किया जाता है। दूसरे दिन संध्याकाल को मुख्य कार्यक्रम 'लाइचिंगजागोई' होता है। इसके पश्चात माइबी के नेतृत्व में 'लाइबो नृत्य' होता है, जो तीन चरणों में संपन्न होता है। इस नृत्य में धीरे-धीरे नृत्य करते हुए और जोर-जोर से कूदते हुए चारों दिशाओं के देवताओं से प्रार्थना की जाती है। चलने में धीमी और तेज दोनों प्रकार की लय होती है।मुख्य नृत्य के बाद 'लोंगखोनजागोई' या 'मिकोनजागोई', तत्पश्चात पाटोनजागोई, फिबुलजागोई, और माइबी का 'चोंगखोंगजागोई' होता है। ये विविध नृत्य जीवन के आध्यात्मिक एवं दार्शनिक पहलुओं तथा पृथ्वी पर उसके अस्तित्व का मूर्त रूप प्रस्तुत करते हैं। ये कार्यक्रम लाई हराओबा उत्सव के अंतिम दिन तक जारी रहते हैं। अंतिम दिन 'लाइ रोई' कार्यक्रम में 'थांगजागोई' (तलवार नृत्य) का भी विशेष प्रदर्शन होता है।

माइबी अनुष्ठान परी द्वारा देवताओं के लिए दुल्हन चुनने हेतु 'लाई नुपिथिबा' नृत्य किया जाता है। 'तंगाखुल' और 'नूरबी' के लौटरोल को लयबद्ध लोकगीत के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जो देवी-देवता के शाश्वत रोमांटिक प्रेम प्रसंग का सुंदर नाटकीय दृश्य है।"माइबी" नृत्य की मूल क्रियाओं में चलना, गिरना और लात मारना शामिल हैं। बाहें फैलाकर ऊपर उठाना और नीचे लाना, उंगलियां फैलाना और चटकाना, हाथों को ललाट और कमर के बीच मोड़कर ऊपर उठाना और नीचे गिरना, पैर पर रेंगना, लात मारना और कूदना इस नृत्य की विशिष्टता है। विभिन्न नृत्यों में हाथ-पैर की गतियों के अनेक विविध रूप देखे जा सकते हैं।

लैमाजागोई: यह नृत्य महिला समूह द्वाराप्रस्तुत की जाती है। लाई हराओबा के समस्त नृत्यों को "थौबलजागोई" अर्थात प्रार्थना एवं सेवा का प्रतीक माना जाता है। यह नृत्य देवी-देवताओं को प्रसन्न करने हेतु किया जाता है, जिसमें प्रमुख देवता 'लैनिंगथौ' और देवी 'लाइरेम्बी' को गीतों के माध्यम से समर्पित किया जाता है।सुंदर वस्त्रधारी लड़कियां सरल हस्त मुद्राओं के साथ 'चुमशाजागोई' का प्रदर्शन करती हैं। लाई हराओबा में थौगलजागोई की श्रृंखला माइबी के 'लाई-ओपकाजागोई', फिर नुपाथौगलजागोई (फामदौजागोई), और अंत में लेमाथागौलजागोई के माध्यम से अस्तित्व में आई। यह समूह नृत्य माइबी के नेतृत्व में देवी-देवताओं को अर्पित लाई हराओबा का अभिन्न हिस्सा है। लड़कियां रंग-बिरंगे वस्त्र और चमकीले आभूषणों से सुसज्जित होती हैं।

खम्बा-थोइबीजागोई: खम्बा-थोइबीजागोई, जिसे फुंगरेलजागोई भी कहा जाता है, लाई हराओबा के समापन पर प्रस्तुत होता है। यह नृत्य 'लैनिंगथौ' और 'लाइरेम्बी' के युगल नृत्य काअभिव्यक्ति है, जो उनके परमानंद को दर्शाता है। साथ ही, यह दुष्ट चैशरा के षड्यंत्रों के कारण मैतै राजा "सैंतरेंग" और उनकी प्रेयसी "सनारेम्बी" के लंबे विरह, पीड़ा और फिर मिलन के आनंद की ऐतिहासिक कथा भी प्रस्तुत करता है।यह नृत्य अंधकार पर प्रकाश की विजय और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है।

लाई हराओबा में प्रदर्शित नृत्य का क्रम इस प्रकार है:

अनुष्ठान	नृत्य का नाम
लाई इकौबा	चुमशाजागोई
	लाइहौजागोई (प्रतिदिन अनुष्ठान आरंभ करने के लिए किया जाने वाला नृत्य)
लाई हिगाबा	खुंजओ-लेइकाओ—जागोई (तीन देवताओं लाइबुंगथौ, लाइनुरा तथा लेइकांगलाई के लिए नृत्य)
	काफूहाइबाजागोई (बर्तन के साथ नृत्य। इसमें छोटे-छोटे कदम बढ़ाते हुए तरंगकी भाँति हस्त मुद्राओं का प्रदर्शन किया जाता है।
जागोईओकपा	(स्वागत नृत्य)
कुरुकलेइजागोई	(यह नृत्य उंगलियों के बीच लांगथ्रेई के कलियों को रखकर किया जाता है। यह सृष्टि की रचना को दर्शाने वाला पेंचीदा नृत्य है।इस नृत्य के कई अंग इस प्रकार हैं:

1. लाइसिंगजागोई- मंदिर से देवता को बाहर लाना।
2. खुबाकजागोई - ताली बजाते हुए आनंद और हर्षोल्लास को दर्शाने वाला नृत्य
3. लैपाकजागोई– जमीन की खुदाई करना।
4. नोंगदाईजागोई- पृथ्वी और स्वर्ग का मिलन।
5. नप्पाजागोई– छड़ दिशाओं की सृष्टि।
6. फिबुनजागोई– काम की सृष्टि।
7. खुटमजागोई– सृजन शक्ति के उत्सर्जन को दर्शाने के मुट्ठीभींचा जाता है।
8. खुटका जागोई– सृजित को देवता को समर्पित करने के लिए कलाइयों को जोड़ा तथा घुमाया जाता है।

लाइबो इसके मुख्य अंग इस प्रकार हैं :

1. एनोइरोल– सृष्टि के गीत, विशेष रूप से पृथ्वी तथा मणिपुर के घाटियों की सृष्टि के गीत पर किया जाने वाला नृत्य्।
2. हाकचिंगसबा–शरीर का निर्माण।
3. युमसबा– गृह निर्माण।
4. लेइसीजागोई– दिशाओं के देवता के सम्मान में घूमना।

निष्कर्ष :

लाई हराओबा मैते समुदाय के देवी-देवताओं के आनंदोत्सव होने के साथ-साथ अनेक नृत्यों का समुच्चय है। समय के साथ-साथ मैतै समुदाय के पौराणिक मान्यताओं एवं दर्शन पर आधारित इस नृत्य पर भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का प्रभाव भी पड़ा है। इस उत्सव के दौरान नृत्य का क्रम महत्वपूर्ण है। इसे निर्धारित क्रम में देखने पर सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया पूरी तरह समझ में आती है। देवी, देवता एवं हस्त मुद्राओं की संख्या समान है। विभिन्न नृत्यों के लिए हस्त मुद्राओं की संख्या अलग-अलग निर्धारित की गई है। यह मणिपुर के मैतै समुदाय का नृत्य है जिसे सुविधानुसार लगभग 15 दिनों तक आयोजित किया जाता है। इसमें सभी आयु वर्ग के व्यक्ति उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। इस प्राचीन नृत्य के माध्यम से अनेक नृत्य, मुद्राओं एवं उनके संकेतों की जानकारी मिलती है।

संदर्भसूची:

1. सिंह, जवाहर, *मणिपुरऔर संस्कृति*, नीलकमल प्रकाशन, 1991
2. Bandopadhay, Sruti, *Manipuri Dance an Assessment on History and Presentation*, Shubhi publication, 2010
3. Devi, Elam Indira. "A Glimpse of the Development of MeteiJagoi (Manipuri Dance)." *Performing Arts: A New Dimension* edited by Huidram Rakesh Singh,et el., 1st ed.. Sunmarg Publishers and Distributors, 2023
4. Singh, R. K. Achoubisana. "Lai-haraoba the gods rejoice*." Dances of Manipur the classical tradition* edited by Saryu Doshi, Marg Publication, 1989.
5. Khangembam, K. (2024). Dance as a Mirror of Social or Cultural Change: A Peek into Manipuri performance History. ShodhKosh: *Journal of Visual and Performing Arts*, 5(1), 38-51. doi: 10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.376

6. थोकचोम, मोनिका, ‘‘फयेङ लाइ हारोबा: संस्कृति एवं पहचान’’ *बहुवचन*, अंक68-71, जनवरी-दिसंबर2021, पृष्ठसं455-463

[1]Devi, Elam Indira.“A Glimpse of the Development of MeteiJagoi (Manipuri Dance).”*Performing Arts: A New Dimension*edited by Huidram RakeshSingh,et el., Sunmarg Publishers and Distributors, 2023,p. 2

[2]वही, पृष्ठ 3

[3]सिंह, जवाहर, *मणिपुर और संस्कृति*, नीलकमल प्रकाशन, 1991, पृष्ठ 96

[4]वही

[5]वही

[6]Bandopadhay, Sruti. *Manipuri Dance an Assessment on History and Presentation*, Shubhi publication, 2010, P. 82

[7]वही

[8]वही, पृष्ठ 95